



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'इक्कीसवी सदी की चुनौतियाँ और माया वर्मा के नवगीत'

डॉ. श्रद्धा सक्सेना

प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

महारानी लक्ष्मी बाई शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय, ग्वालियर

ब्रजेन्द्र सिंह गुर्जर

शोधार्थी, जीवाजी विश्व विद्यालय, ग्वालियर

"गीत, गाथा विश्व की, आँसू भरी है।
गीत, कोई प्यार वाली निर्झरी है।
गीत, मानव-हृदय का प्रतिबिंब प्यारा।
गीत, विधि की श्रेष्ठतम कारीगरी है।" ?

श्रीमती माया वर्मा द्वारा दी गयी, गीत की यह परिभाषा, इस विधा को अनेक आयाम देती है। गीत को सार्वभौमिक एवं शाश्वत सत्ता से अनुप्राणित करती है। जीवन की कठोरता में संवेदना का संचार करने वाली विधा के रूप में निरूपित करती है। गीत को कविता का ही नहीं, जीवन का भी आत्मीय रूप सिद्ध करती है।

वर्तमान में 'नव' विशेषण जोड़कर 'गीत' को 'नवगीत' के रूप में गृहण किया गया है। इस सृष्टि में वही चीज़ दूर तक जाने में सफल होती है, जो समय के साथ अपने अंदर परिवर्तन एवं नवीनता का समावेश करती चले। पहले गीत को, व्यक्तिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति मात्र माना जाता था, किंतु आज गीत अपनी सामाजिक उपयोगिता सिद्ध कर रहा है। जीवन में प्रवेश करने वाले हर नवाचार से जुड़कर गीत उसे नयी राह, नवीन आशा तथा नयी प्रेरणा देने समर्थ है।

‘गीत विधि की श्रेष्ठतम कारीगरी’ केवल इसलिये नहीं है, कि वह जीवन में सरसता लाता है, बल्कि इसलिए है क्योंकि वह जीवन की प्रत्येक चुनौती का सामना करके, प्रत्येक समस्या का समाधान करने और नवीन दिशा बोध कराने का सशक्त माध्यम है। उसकी आंतरिक चेतना आज भी ‘सामवेद’ की है। वह बाह्य परिवेश, युगीन परिवेश के साथ तद्युगीन नवीनता को अपनाता रहा है, इसलिए आधुनिकता और परम्परा का समन्वय नवगीत की प्रमुख विशेषता है।

उपर्युक्त सभी विशेषताओं को समन्वित करके, जब नवगीत का स्वरूप निर्धारित करते हैं, तो मस्तिष्क में माया वर्मा के नवगीतों की छवि उभरने लगती है। माया वर्मा के नवगीत उनके कृतित्व का प्राण-तत्त्व हैं और उनका कृतित्व उनके व्यक्तित्व का प्राण-तत्त्व है। वे लिखती हैं-

"सुनकर गीत, अगर सुख पाए, आज किसी का मन।
तो गाते-गाते गुजार दें, हम अपना जीवन॥" २

उनके गीतों में वर्तमान समय की सभी चुनौतियों का सामना करने की सामर्थ्य है। वर्तमान की सबसे बड़ी चुनौती हैं- मानव-समाज में बढ़ती संवेदनहीनता, करुणा तथा सौहार्द का अभाव। भूमंडलीकरण तथा संचार माध्यमों का बढ़ता हुआ प्रभाव भारत में भारतीयता के लिए संकट बनता जा रहा है। प्यार तथा सौहार्द हमारी संस्कृति के प्रमुख तत्व हैं, हमारी पहचान, हमारी अस्मिता हैं। पाश्चात्य प्रभाव हमारी संवेदनाओं पर प्रहार कर रहा है, जिसके कारण जीवन में प्यार का अभाव हो रहा है और मनुष्य का हृदय मरुभूमि बन गया है। माया वर्मा जैसी संवेदनशील गीतकार ऐसे परिवेश को सहन नहीं करतीं। वे मानव मात्र से मनुहार करती हैं -

"माँगता यह विश्व, इसको आज कुछ उपहार दे दो।
बन गया मरुथल हृदय, अब तो जरा-सा प्यार दे दो।
ए! जरा-सा प्यार दे दो॥" ३

इस मनुहार में कवयित्री की पीड़ा को अनुभव किया जा सकता है- व्यक्त नहीं। महाप्राण निराला ने भी अपने गीत में इस पीड़ा को व्यक्त किया था। उन्होंने लिखा था- “स्नेह-निर्झर बह गया है,

रेत ज्यों तन रह गया है।" ४

माया वर्मा इस शुष्कता को समाप्त करने का, इस शुष्कता से मनोभूमि में पड़ी दरारों को मिटाने का रास्ता बताती हैं-

"मानस-मानस प्यासा है- सौजन्य प्रेम का।
मानव! तुम सौहार्द-प्रेम के घन बन जाओ ॥" ५

आज अंध भौतिकता विकास की विलक्षण परिभाषा बन गयी है। केवल भौतिक सुख-समृद्धि, वैभव-सम्पन्नता तथा ऐश्वर्य को ही मनुष्य, जीवन के लिए महत्वपूर्ण मानने लगा है। माया वर्मा के गीत, ऐसे भटके हुए मनुष्यों को बताते हैं कि

“दुनिया की हर चीज़ कीमती ही होती है,
लेकिन सबसे मूल्यवान मन का मोती है।” ६

हृदय की निश्छलता, मन की पवित्रता, चरित्र की निष्कपटता ही जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है- यह तथ्य वर्तमान की इस चुनौती का उत्तर है। इसी के अभाव के कारण आज, तरह-तरह के सामाजिक अन्याय हो रहे हैं। व्यक्ति अपने भ्रष्ट आचरण में इतना सुखी, संतुष्ट और मग्न है कि वह यह भी भूल गया कि उसकी विरासत, उसका गौरवशाली अतीत, उसका सही मायनों में इंसान होना- यही उसकी पहचान है। वह अपने सांस्कृतिक मूल्यों से सम्बद्ध रह कर ही अपना पूर्ण विकास कर सकता है। पापाचरण, भ्रष्ट जीवनशैली, प्रपंचयुक्त जीवन-यापन में वह अपनी अस्मिता को किस तरह खोता जा रहा है- यह पीड़ा माया जी के गीतों में अद्भुत प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त हुई है-

“ की पुनः लांछित जगत ने, सत्य की सुकुमार सीता।

कौरवों की चाल पर, फिर से उठी भर आँख गीता॥” ७

इस परिवेश में, जो विकास मानव ने किया - वह कितना सतही और मिथ्या है। उसमें कितनी विसंगतियाँ हैं- माया जी के गीतों में स्थान-स्थान पर इनकी ओर ध्यान खींचा गया है-

“मिले न हक जिंदा रहने के, कपड़े और दो रोटियाँ।

छूते रहे लोग हिमगिरि की, और चाँद की चोटियाँ॥” ८

समसामयिक विसंगत स्थितियाँ- केवल वैयक्तिक स्तर पर ही नहीं, सम्पूर्ण सामाजिक परिवेश को अंदर तक प्रभावित करती हैं। अनैतिक आचरण के परिणाम स्वरूप उपजी असंगत आर्थिक नीतियों के कारण हमारा सांस्कृतिक जीवन भी चरमरा गया है। मायाजी के नवगीतों में यह संवेदना व्यापक रूप से उभर कर आती है -

"त्योहारों की खुशी न जाने, कौन चुरा कर ले गया?

बदले में चिंताएँ, कुंठाएँ और विपदाएँ दे गया।

सावन अब आँखों में, होली जले हृदय में नित्य ही।

जन-जन का संताप निरख कर स्वयं रो उठा सत्य ही।

तरस रहे गोपाल आज के, माता तक के दूध को।

मानव की, या मानवता की, बोलो किसकी हार है ?” ९

ऐसे अनेक प्रश्न नवगीत को सामाजिक सरोकारों से जोड़ते हैं। गहन संवेदनात्मक अनुभूति के साथ वर्तमान राजनैतिक एवं आर्थिक विषमताओं के चित्र उकेरना नवगीत के कथ्य की अनूठी विशेषता है। माया वर्मा के गीत इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। डॉ. सत्येन्द्र शर्मा" संवेदना का गहनता को राग का लोकव्यापीकरण मानते हैं। अपनी पुस्तक "नवगीत : संवेदना और शिल्प" में उन्होंने लिखा है - "कविता अन्ततः मानवीय राग का उद्घाटन है। राग संवेदना का रूप लेकर विस्तार पाता है। संकुचन में उसकी परिणति वैयक्तिक प्रेम-विलास और सुख-दुख के गान में होती है।" कहना न होगा कि माया वर्मा के गीतों में राग के लोकव्यापीकरण का जितना सुंदर निर्वाह हुआ है- अन्यत्र दुर्लभ है।

आज के युग की एक और बड़ी चुनौती, जिसने सम्पूर्ण भारतीयता की गरिमा को आहत किया है, वह है- नारी की अस्मिता का संकट। पाश्चात्य प्रभाव एवं उत्तर- आधुनिकता में भारतीय नारी का मूल रूप खोता जा रहा है। आज अपने गरिमामयी स्वरूप को, कुछ अंशों में नारी स्वयं लांछित कर रही है। वितैषणा तथा लोकेषणा की अंधी दौड़ में पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी शामिल हैं। माया जी अपने गीतों में दोनों को उद्बोधित करती हैं। नारियों से कहती हैं-

"नारी! तुम रमणी मात्र नहीं हो, जानो ।

अपनी व्यापक वात्सल्य शक्ति पहचानो॥" १०

पुरुष वर्ग से कहती हैं -

"ओ कलाकार! नारी को और न नग्न करो।

चित्रों में उसका गरिमामय ही रूप भरो॥" ११

सदियों से नारी जाति के प्रति होते आ रहे अत्याचारों से वे अत्यधिक उद्वेलित हैं। वे लिखती हैं-

"अब तक जो होती रही भूल, उसको इतिहास न दुहराए।

अस्तित्व लुटाने वाली नारी को अब न्याय दिया जाये।

कुछ धन देकर ही लोग, बड़ा सम्मान जगत में पाते हैं।

कुछ चंदे के बल पर अपना, पत्थर पर नाम लिखाते हैं।

पर इसने अपना रक्त और मज्जा देकर भी कुछ न कहा।

उसकी संतति के साथ, पिता का ही तो चलता नाम रहा।" १२

समाज में प्रमुख होता जा रहा पैसे का प्रभाव इंसान को उसकी इंसानियत से गिरा रहा है। पैसे के लालच में इंसान किसी भी हद तक गिर रहा है। भावनाएँ, प्रेम, प्यार, भाईचारा, सब उसने दाँव पर लगा दिया है, जीवन में वैमनस्य को शामिल कर लिया है। ऐसे लोगों के लिए उन्होंने लिखा है-

"मातृ प्रकृति में, अधिक बुद्धि-बल है, स्वार्थी संसार से।

दिल की आकृति बड़ी बनायी, पैसे के आकार से।

पैसा तो साधन है भाई, साध्य यहाँ बस प्यार है।

पंचतत्व से सृष्टि चल रही, क्योंकि वहाँ सहकार है।

अतः लड़ो मत, जर-जमीन के हित-हट कर संस्कार से॥" १३

'गीत' शब्द में 'नव' विशेषण, जुड़ने का एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू है-शिल्प विधान की नवीनता। अपने इस परिवर्तन के कारण ही यह गीत की विकास-यात्रा का अभिनव सोपान है। अपने नये कलेवर के साथ यह नवीन आधुनिकता-बोध को रूपायित करता है। माया वर्मा के गीत, नवगीत की उक्त कसौटी पर पूर्णतः खरे सिद्ध होते हैं। उनका यह गीत प्रतीकों की नवीनता को दृष्टि से अद्वितीय है-

"सूरज बन कर चमकोगे तो, निशि का तमस पिघल जायेगा।

X X X X X X X X X X X X X X X

साधुवेश रखने से पहले, रावण स्वयं सँभल जाएगा॥" १४

एक अन्य गीत में, नवीन प्रतीक, युगानुरूप नवीन जीवन-शैली की ओर संकेत कर रहे हैं-

"द्रौपदी-सा दिखा जब कभी जग हमें,

जिंदगी ही हमारी वसन बन गयी।

प्रश्न आया कभी देश या धर्म का,

जिंदगी ही हमारी कफन बन गयी॥" १५

अलंकार काव्य की शोभा होते हैं। रूपक की नवीनता माया जी को नवगीतकारों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा करती है। प्यार के लिये अब तक अनेक उपमाएँ तथा रूपक पढ़े, किंतु प्यार को जो स्थान माया वर्मा ने दिया, वह अद्वितीय है। वे कहती हैं-

"प्यार तो पावन ऋचा है वेद की।" १६

यह परिभाषा प्यार को पवित्रता तथा ऊँचाई के नए आयाम देती है। उपमा की नवीनता इस गीत में दृष्ट्य है - साथ ही अनुभूति की गहराई कवयित्री की संवेदनशीलता की परिचायक भी है-

"पिघलकर आंतरिक पीड़ा, करुण मुख पर बही ऐसे।

गगन पर वाष्पयुत जल, सिंधुतल का, छा गया जैसे।" १७

तत्सम तथा देशज शब्दों का मिश्रित प्रयोग, माया वर्मा के दार्शनिक पहलू को आंचलिकता से जोड़ता है -

"पनघट- पनघट भटकीं प्यासी साँसे, पर न भरी इस तन की गागरिया।

शाश्वत है प्राण की पिपासा ही, नश्वर यह तृप्ति की कहानी है॥" १८

सहज, सरल भाषा के माध्यम से, गहरी भावनात्मक अभिव्यक्ति माया वर्मा के नवगीतों की अन्यतम विशेषता है -

"आँख खोल कर जो देखा, वह रहा बहुत कम,

ज्यादा वह निकला, जो देखा - आँख मूँद कर।"

X X X X X X X X X X X X

"हमें न सागर डुबा सका, गहरे पानी में।

किंतु कभी हम सराबोर हो गये बूँद से॥" १९

उर्दू तथा तत्सम के मिश्रण में, शब्द प्रयोग की नवीनता दृष्टव्य है-

"झुकते गये अनजान सज़दागीर की तरह,
मालूम कर सके न सबब इस झुकाव का।
X X X X X X X X X X X X X
मधुशाला को मंदिर कह कर शीश झुकाया तो,
मदमाते साक़ी में भी भगवान नज़र आया।
X X X X X X X X X X X X X
आग है यदि इस ज़मी की प्यास में,
तो झुकेगा मेघ बन कर आसमाँ॥" २०

नवीन बिम्बों के प्रयोग माया जी के शिल्प को तो सुदृढ़ करते ही हैं, उनकी संवेदना की गहराई का भी परिचय देते हैं-

बरसात बताती है कि कहीं, बन रहा भाप कोई सागर।
संकेत कुए का देती है, पनघट पर रखी हुई गागर॥" २१

उनकी शब्द-योजना भावों की गहराई के अनुरूप ही होती है। भावों की दृढ़ता, आशावादी स्वर तथा अनोखा आत्मविश्वास, सटीक शब्द-योजना के कारण नव गीत को अनोखा आयाम देते हैं -

"तमस से हार माने - ज्योति का सुत हो नहीं सकता।
किरण-केशर तिलक को, मावसी तम धो नहीं सकता॥" २२

वर्तमान में, काव्य के समक्ष बहुत बड़ी चुनौती है- गेयता, संगीतात्मकता तथा सरसता का अभाव। यह नवगीत के आने का एक महत्वपूर्ण कारण भी है। अपनी सरसता, गेयता एवं संगीतात्मकता के कारण माया जी के गीत अत्यंत लोकप्रिय हुए हैं -

"अंतर्घट से ममता का मधु तू रात-दिवस छलकाता चल।
रे जीवन तत्त्व लुटाता चल, साथी! पथ में मुस्काता चल॥" २३

लोक जीवन से सम्पृक्तता नवगीत की अपनी पहचान है। पर्व, त्यौहार, ऋतु-वर्णन, भारत के किसान का स्वरूप, मिट्टी की खुशबू - माया जी के प्रिय वर्ण्य विषय हैं। जन-जीवन में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति लगाव पैदा करना उनके गीतों का मूल उद्देश्य है-

"अभी तो हर कुटी में दीप जल पाया न पूजा का,
न तुलसी हम उगा पाए, अभी प्रत्येक आँगन में।
कहाँ गूंजे अभी घर वेद की पावन ऋचाओं से,
अभी तो आस्था-निष्ठा, हमें हर प्राण भरनी है।
भला फिर क्यों अभी से हार बैठे चेतना के कण ?" २४

कलेवर की संक्षिप्तता माया जी के गीतों की अन्यतम विशेषता है। छोटे से कैनवास पर समूची मानव-जाति की वर्तमान पतित अवस्था तथा उससे जनित घनीभूत पीड़ा का चित्र कवयित्री की अभिव्यक्ति-प्रवणता का सुंदर प्रमाण है-

"सुबह से शाम तक, हर खास से आम तक,
व्यस्त-त्रस्त मानव का, स्वार्थ-डूबा रेगिस्तानी व्यवहार,
और सुनकर मनु-पुत्रों का करुण चीत्कार,
सूरज जब ऊब गया, तो खुद बेहाल हुआ,
पीड़ा से लाल हुआ,
पेड़ों-पहाड़ों में छिपता, सिमटता-सा,
मंदगति घिसटता-सा,
पश्चिम में डूब गया।" २५

मायाजी की गहन अनुभूतियाँ, समाज के प्रति पीड़ा-बोध, मानव मात्र के प्रति प्यार, आत्मीयता एवं मानवता के उत्कर्ष का भाव, अभिव्यक्ति की सहजता, सरलता एवं भावप्रवणता उनके गीतों व नवगीतों को पाठक के हृदय में स्थान दिलाते हैं। संवेदनाओं की निर्झरिणी हैं- उनके गीत। लेखनी में वह सामर्थ्य नहीं है कि उनके गीतों की सभी विशेषताएँ चित्रित कर सके।

संदर्भ सूची :-

१. माया वर्मा, संजीवनी, कृति प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ – २८
२. माया वर्मा, जीवन सुरभि, कृति प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ – ४१
३. माया वर्मा, नये संदर्भ, भावना प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ- ४१
४. राम विलास शर्मा, राग-विराग (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का गीत), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ- १२९
५. माया वर्मा, नये संदर्भ, भावना प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ- ५७
६. वही , पृष्ठ – १२
७. वही , पृष्ठ – ४१
८. वही , पृष्ठ – ५०
९. वही , पृष्ठ – ५०
१०. माया वर्मा, जीवन सुरभि, कृति प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ – ८१
११. माया वर्मा, संजीवनी, कृति प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ – ९७
१२. माया वर्मा, जीवन सुरभि, कृति प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ – ७९
१३. माया वर्मा, जीवन सुरभि, कृति प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ – ९७

१४. माया वर्मा, नये संदर्भ, भावना प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ- २०
१५. माया वर्मा, जीवन सुरभि, कृति प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ – ०३
१६. माया वर्मा, नये संदर्भ, भावना प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ- १७
१७. वही, पृष्ठ- ४९
१८. माया वर्मा जी की हस्तलिखित डायरी से
१९. माया वर्मा, संजीवनी, कृति प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ – ६२
२०. माया वर्मा जी की हस्तलिखित डायरी क्रमांक-०९ से
२१. माया वर्मा, नये संदर्भ, भावना प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ- २२
२२. वही, पृष्ठ- २४
२३. वही, पृष्ठ- २७
२४. वही, पृष्ठ- ४४
२५. डॉ. श्रद्धा सक्सेना, साहित्य साधिका माया वर्मा- व्यक्तित्व एवं कृतित्व, बुक्स क्लीनिक प्रकाशन, रायपुर, पृष्ठ-९९

